

CLASS : 10th (Secondary)

Code No. 5540

Series : Sec. March/2022

रोल नं०

पूर्व मध्यमा (द्वितीय वर्ष) संस्कृत व्याकरण (आधुनिक आर्ष पञ्चति)

Sub Code : 1004/SVA

(Only for Fresh/Re-appear Candidates)

समय : **2½ घण्टे**

/ पूर्णांक : **80**

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ ४ तथा प्रश्न 4 हैं।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिये गये कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख्य-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
- उत्तर-पुस्तिका के बीच में खाली पन्ना/पन्ने न छोड़ें।
- उत्तर-पुस्तिका के अतिरिक्त कोई अन्य शीट नहीं मिलेगी। अतः आवश्यकतानुसार ही लिखें और लिखा उत्तर न काटें।
- परीक्षार्थी अपना रोल नं० प्रश्न-पत्र पर अवश्य लिखें।
- कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व यह सुनिश्चित कर लें कि प्रश्न-पत्र पूर्ण व सही है, परीक्षा के उपरान्त इस सम्बन्ध में कोई भी दावा स्वीकार नहीं किया जायेगा।

नोट : सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

खण्ड: 'क'

(वैकल्पिक प्रश्नोत्तराणि)

1. यथानिर्दिष्ट प्रश्नेषु शुद्धमुत्तरं चित्वा लिखत —

$1 \times 40 = 40$

(i) अ + दा + ल्यप् संयोगे किं रूपम् ?

(क) अदीय

(ख) ओदाय

(ग) आदाय

(ii) मृज् + व्यत् संयोगे किं रूपम् ?

(क) मार्जः

(ख) मृग्यः

(ग) मार्ग्यः

(iii) भुज् + ष्यत् संयोगे किं रूपम् ?

(क) भुज्या

(ख) भोग्या

(ग) भोग्यम्

(iv) लू + ल्यु संयोगे किं रूपम् ?

(क) लावणः

(ख) लूनः

(ग) लवणः

(v) गो + द्य + कः संयोगे किं रूपम् ?

(क) गुदा

(ख) गोदाकः

(ग) गोदः

(vi) पाकः, पदे कः प्रत्ययः कः धातुः चिनुत ?

(क) पच् + क्यप्

(ख) पाच् + ष्यत्

(ग) पच् + घञ्

(vii) चयः, पदे कः प्रत्ययः कः धातुः चिनुत ?

(क) चि + एरच्

(ख) चि + कः

(ग) चि + क्यप्

(viii) कृतिः, पदे कः प्रत्ययः कः धातुः चिनुत ?

(क) कृ + कितन्

(ख) कृ + तिप्

(ग) कृ + कितिन्

(ix) प्रकृत्य, पदे कः प्रत्ययः कः धातुः चिनुत् ?

(क) प्र + कृ + कत्वा (ल्प्) (ख) कृ + ल्प्

(ग) पृ + कृ + यप्

(x) स्मारम्, पदे कः प्रत्ययः कः धातुः ?

(क) सृ + ष्मुल् (ख) सृ + ष्वुल्

(ग) सृ + अण्

(xi) अश्वात् पतति, वाक्ये का विभक्तिः ?

(क) तृतीया (ख) चतुर्थी

(ग) पंचमी

(xii) जगतः कर्ता, वाक्ये का विभक्तिः ?

(क) चतुर्थी (ख) पंचमी

(ग) षष्ठी

(xiii) स्थाल्यां पचति, वाक्ये का विभक्तिः ?

(क) पंचमी (ख) षष्ठी

(ग) सप्तमी

(xiv) हरिं भजति, वाक्ये का विभक्तिः ?

(क) चतुर्थी (ख) तृतीया

(ग) द्वितीया

(xv) रामेण वाली हतः, वाक्ये का विभक्तिः ?

(क) द्वितीया (ख) चतुर्थी

(ग) तृतीया

(xvi) कृष्णस्य समीपम्, अत्र किं समस्तपदम् ?

- | | |
|---------------|---------------|
| (क) उपकृष्णा | (ख) उपकृष्णम् |
| (ग) उपकृष्णेन | |

(xvii) मद्राणां समृद्धिः, अत्र किं समस्तपदम् ?

- | | |
|--------------|--------------|
| (क) सुमद्रा | (ख) सुमद्रम् |
| (ग) सुमद्राय | |

(xviii) हरिणा त्रातः, अत्र किं समस्तपदम् ?

- | | |
|---------------|---------------|
| (क) हरीत्रातः | (ख) हरित्रातः |
| (ग) हरिदत्तः | |

(xix) गोभ्यः हितम्, अत्र किं समस्तपदम् ?

- | | |
|-------------|------------|
| (क) गोहितम् | (ख) गौहितः |
| (ग) गोहिताय | |

(xx) राज्ञः पुरुषः, अत्र किं समस्तपदम् ?

- | | |
|----------------|---------------|
| (क) राजपुत्रः | (ख) राजपुरुषः |
| (ग) राजापुरुषः | |

(xxi) टि लोप विधायकं सूत्रं चिनुत ?

- | | |
|------------------|----------------------|
| (क) नस्तद्धिते | (ख) उपसर्जनं पूर्वम् |
| (ग) अव्ययीभावश्च | |

(xxii) अधिकारसूत्रं चिनुत ?

- | | |
|---------------|----------------|
| (क) तत्पुरुषः | (ख) नस्तद्धिते |
| (ग) द्विगुश्च | |

(5)

(xxiii) द्विगु संज्ञा विधायकसूत्रं चिनुत ?

- | | |
|----------------|---------------------------|
| (क) पंचमी भयेन | (ख) कर्तृकरणे कृता बहुलम् |
| (ग) द्विगुश्च | |

(xxiv) सप्तमी विधायकसूत्रं चिनुत ?

- | | |
|-------------------|----------------|
| (क) षष्ठी | (ख) पंचमी भयेन |
| (ग) सप्तमी शौण्डे | |

(xxv) यत्र भयं, भीतिः विभेति तत्र का विभक्तिः युज्यते —

- | | |
|-------------|-----------|
| (क) षष्ठी | (ख) पंचमी |
| (ग) चतुर्थी | |

(xxvi) ददाति, उपपद योगे का विभक्तिः —

- | | |
|--------------|------------|
| (क) द्वितीया | (ख) तृतीया |
| (ग) चतुर्थी | |

(xxvii) कर्मणि का विभक्तिः प्रयुज्यते —

- | | |
|--------------|------------|
| (क) द्वितीया | (ख) तृतीया |
| (ग) चतुर्थी | |

(xxviii) कर्तृकरणयोः का विभक्तिः प्रयुज्यते —

- | | |
|------------|-------------|
| (क) पंचमी | (ख) चतुर्थी |
| (ग) तृतीया | |

(xxix) सम्बोधने का विभक्तिः प्रयुज्यते —

- | | |
|------------|--------------|
| (क) प्रथमा | (ख) द्वितीया |
| (ग) तृतीया | |

(xxx) अपादने। सूत्रं पूर्णं लिखत —

- | | |
|------------|-------------|
| (क) तृतीया | (ख) चतुर्थी |
| (ग) पंचमी | |

(xxxxi)-(xxxxv) मंजूषा पदैः पञ्च सूत्राणां रिक्त स्थानानि पूरयत् —

मंजूषा — लट्, लोट्, लड् लिट्, लृट्।

(xxxxi) परोक्षे।

(xxxxii) शेषे च।

(xxxxiii) वर्तमाने।

(xxxxiv) च।

(xxxxv) अनद्यतने।

(xxxxvi) भू - लट् - प्र०पु० द्विवचने किं रूपम् —

- | | |
|----------|-----------|
| (क) भवथ | (ख) भवावः |
| (ग) भवतः | |

(xxxxvii) सेव् लोट् — म०पु० एकवचने किं रूपम् —

- | | |
|------------|------------|
| (क) सेवः | (ख) सेवश्व |
| (ग) सेवस्व | |

(xxxxviii) स्था (तिष्ठ) लृट् — उ०पु० बहुवचने किं रूपम् —

- | | |
|-------------------|------------------|
| (क) तिष्ठिष्वन्ति | (ख) स्था स्यन्ति |
| (ग) स्थास्यामः | |

(xxxxix) एध्-विधिलिङ् — प्र० पु० एकवचने किं रूपम् —

- | | |
|----------|-----------|
| (क) एधते | (ख) एधेते |
| (ग) एधेत | |

(xI) अस् लङ् – प्र० पु० एकवचने किं रूपम् ?

- | | |
|-----------|--------------|
| (क) अस्ति | (ख) भविष्यति |
| (ग) आसीत् | |

खण्डः ‘ख’
(लघूतरात्मक प्रश्नाः)

2. अधः प्रदत्तेषु सत्त्वत्य विधायकसूत्राणां –

रिक्त स्थानानि पूरयत् –

$2 \times 7 = 14$

- (i) आतश्चो।
- (ii) ण्वुल।
- (iii) एजेः।
- (iv) प्रियवशे।
- (v) करणे।
- (vi) दृशोः।
- (vii) उपसर्गे च।
- (viii) क्त क्त।
- (ix) शुषः।
- (x) पचो।

खण्डः ‘ग’
(विस्तृत प्रश्नाः)

3. प्रदत्त उदाहरणेषु द्वयोः प्रत्ययविधायकसूत्रं लिखत् –

$3 \times 2 = 6$

- (i) पाकः, अत्र ‘घञ्’ विधायकसूत्रं किम्

- (ii) स्वप्नः, अत्र 'नन्' विधायकसूत्रं किम्
- (iii) कृतिः, अत्र 'वितन्' विधायकसूत्रं किम्
- (iv) हसनम्, अत्र 'ल्युट्' विधायकसूत्रं किम्

खण्डः 'घ'

4. यथा निर्दिष्ट धातुषु चतुर्णां रूपाणि लिखत् —

$5 \times 4 = 20$

- (क) भू — धातो : लड्गलकारे
- (ख) सेव् — धातो : लट्टलकारे
- (ग) पच् — धातो : लृट्टलकारे
- (घ) एध् — धातो : लृट्टलकारे
- (ङ) अद् — धातो : विं लिड्गलकारे
- (च) शीड् — धातो : लृट्टलकारे
- (छ) एध् — धातो : लोट्टलकारे

